बपतिस्मे से होने वाले परिवर्तन

''परन्तु परमेश्वर का धन्यवाद हो, कि तुम जो पाप के दास थे तौभी मन से उस उपदेश के मानने वाले हो गए, जिस के सांचे में ढाले गए थे। और पाप से छुड़ाए जाकर धर्म के दास हो गए'' (रोमियों 6:17, 18)।

बपतिस्मा लेते समय, बपतिस्मे से जुड़ी आत्मिक वास्तविकताओं की समझ होना आवश्यक है। बपतिस्मा लेने के समय यदि हम मन से आत्मिक रूप से शामिल हैं, तो चार महत्वपूर्ण परिवर्तन होते हैं।

स्थिति का परिवर्तन

बपतिस्मा लेने के लिए आवश्यक है कि हम यीशु मसीह में जिसने हमारे पापों की क्षमा के लिए मरकर अपना लहू बहा दिया, मसीहा के रूप में विश्वास करें। हमें उसे अपना प्रभु मानने के लिए अपने मन में अपने पिछले जीवन को त्यागने का संकल्प करना ज़रूरी है। यदि हम ऐसा करते हैं, तो हमारी स्थिति बदल जाएगी अर्थात (1) हम खोए हुए से उद्धार पाए हुए बन जाएंगे (मरकुस 16:16; 1 पतरस 3:21), (2) पाप के बोझ लदे होने से अपने पापों से शुद्ध किए हुए बन जाएंगे (प्रेरितों 22:16), और (3) अपने पापों के दोषी होने से पापों की क्षमा पाए हुए बन जाएंगे (प्रेरितों 2:38; कुलुस्सियों 2:12, 13)। ये तीनों अलग-अलग परिवर्तन नहीं हैं बल्कि एक ही परिवर्तन के संकेत हैं। यह परिवर्तन उस समय होता है जब कोई गैर मसीही अपने पापों को यीशु के लहू से धुलवाकर मसीही बनता है।

स्थान का परिवर्तन

यदि बपतिस्मा लेते समय हम सही आत्मिक संगति में हैं, तो हम यीशु के बाहर नहीं रहेंगे, जहां हम उससे अलग थे। पौलुस ने इफिसुस के मसीहियों को बताया था कि ''तुम लोग उस समय मसीह से अलग और इस्राएल की प्रजा के पद से अलग किए हुए, और प्रतिज्ञा की वाचाओं के भागी न थे, और आशाहीन और जगत में ईश्वररहित थे'' (इफिसियों 2:12)।

मसीही बनकर, हमारी स्थिति बदल जाती है ज़्योंकि हम मसीह में आ जाते हैं जहां हमें यीशु के लहू के द्वारा परमेश्वर के निकट लाया जाता है (इफिसियों 2:11-13)। यीशु

से बाहर होने से उसमें आने तक की अपनी स्थिति बदलने से (रोमियों 6:3; गलतियों 3:27) हम उन आशिषों में प्रवेश करते हैं जो यीशु के लहू से उपलब्ध करवाई गई हैं। उसमें हमें उसके लहू के द्वारा छुटकारा अर्थात अपने अपराधों की क्षमा मिलती है (इफिसियों 1:7; कुलुस्सियों 1:14)। मसीह में हमें नई सृष्टि बनाया जाता है (2 कुरिन्थियों 5:17), हमारी पहुंच अनुग्रह तक हो जाती है (इफिसियों 1:6; 2 तीमुथियुस 2:1) हमें उद्धार प्राप्त होता है (2 तीमुथियुस 2:10), हमें अनन्त जीवन का आनन्द मिलता है (1 यूहन्ना 5:11) और हमें सब प्रकार की आत्मिक आशिषें प्राप्त होती हैं (इफिसियों 1:3)।

यीशु में बपतिस्मा लेने से, हम उस *एक देह* में प्रवेश करते हैं जो यीशु में है (रोमियों 12:5), जिसे मसीह की देह (1 कुरिन्थियों 12:27), कलीसिया (इफिसियों 1:22, 23; 5:30; कुलुस्सियों 1:18, 24; 3:15) कहा जाता है। यीशु उस एक देह (इफिसियों 5:23) अर्थात कलीसिया का उद्धारकर्ज़ा है जिसमें बपतिस्मा लेते समय हम शामिल होते हैं (1 कुरिन्थियों 12:13)।

जो लोग कलीसिया में हैं, उनके नाम स्वर्ग में ''लिखे हुए'' हैं (इब्रानियों 12:23)। इसका अर्थ यह है कि हम स्वर्ग में प्रवेश करेंगे ज्योंकि हमारे नाम जीवन की पुस्तक में लिखे गए हैं (प्रकाशितवाज़्य 21:27)। विजय पाना हमारे लिए आवश्यक है ताकि हमारे नाम उस पुस्तक से निकाले न जाएं (प्रकाशितवाज़्य 3:5)। हमारे नाम जीवन की पुस्तक में न मिलने पर हमें आग की झील में डाल दिया जाएगा (प्रकाशितवाज़्य 20:15)। कलीसिया के सदस्य होने के कारण, हमें यीशु के लहू से ''वचन के द्वारा जल के स्नान से शुद्ध कर के'' (इफिसियों 5:26) सिद्ध (इब्रानियों 12:23), निष्कलंक और निर्दोष बनाया गया है। इसलिए हमें यीशु के सामने निर्दोष लाया जाएगा (इफिसियों 5:27; कुलुस्सियों 1:19-23)।

कलीसिया *यीशु का राज्य* है (मत्ती 16:18, 19); इसे हिलाया नहीं जा सकता (इब्रानियों 12:28)। राज्य के सदस्य और राज्य के पुत्र सूर्य की नाईं यीशु और पिता के अनन्त राज्य में चमकेंगे (मत्ती 13:37-43; 2 पतरस 1:10, 11)। उस राज्य में हम जल और आत्मा से जन्म लेकर प्रवेश करते हैं (यूहन्ना 3:3-5)।

कलीसिया के सदस्य *परमेश्वर के घर* अर्थात उसके परिवार की संतान हैं (1 तीमुथियुस 3:15)। बपतिस्मा लेने के समय हम विश्वास से परमेश्वर के बालक अर्थात परमेश्वर के घर के सदस्य बन जाते हैं (गलतियों 3:26, 27)। संतान होने के कारण, हम परमेश्वर के वारिस और यीशु के साथ वारिस हैं (रोमियों 8:17; गलतियों 4:7)। वारिस होने के कारण हमारी अनन्त मिरास स्वर्ग में सदा तक रहने वाला निवास है (1 पतरस 1:3, 4)।

न्याय परमेश्वर के घर से ही आरज़्भ होगा! परमेश्वर के घर के लोग सुसमाचार को मानने वालों को ही कहा गया है ज़्योंकि पतरस ने उन्हें सुसमाचार को न मानने वालों से अलग किया है (1 पतरस 4:17)। सुसमाचार उद्धार के निमिज़ परमेश्वर की सामर्थ है (रोमियों 1:16), इसका अर्थ यह है कि जो लोग परमेश्वर के घर अर्थात कलीसिया में हैं उनका उद्धार हुआ है, वे बचाए हुए हैं। यदि हम सुसमाचार को नहीं मानते, तो हम ''उसकी शज़्ति के तेज से दूर होकर अनन्त विनाश का दण्ड पाएंगे'' (2 थिस्सलुनीकियों 1:9)।

कलीसिया को "*झुण्ड*"(प्रेरितों 20:28) भी कहा जाता है। यीशु ने अपने झुण्ड की भेड़ों के लिए अपने प्राण दे दिए (यूहन्ना 10:11, 15)। उसकी भेड़ों के रूप में हम अपने आपको उसके सामने समर्पित करते हैं (यूहन्ना 10:27; इफिसियों 5:24)। हमें अनन्त जीवन दिया जाएगा ज़्योंकि हम उसके पीछे चलते हैं (यूहन्ना 10:27, 28)। प्राकृतिक जगत में, जैसे भेड़ें एक झुण्ड में रहती थीं; वैसे ही आत्मिक राज्य में भी, यीशु के झुण्ड के सदस्य बनने के लिए हमारे लिए आत्मिक जन्म लेना आवश्यक है (यूहन्ना 3:3-5)।

हम कहां हैं, इससे बहुत बड़ा फर्क पड़ता है। यदि हम मसीह की एक देह में नहीं हैं, जो कि उसकी कलीसिया अर्थात यीशु का राज्य, परमेश्वर का परिवार और यीशु का झुण्ड है, तो हम स्वर्ग में प्रवेश नहीं कर सकते। बपतिस्मा लेने से ही हमारी स्थिति बदलती है ज़्योंकि उससे हम मसीह की कलीसिया में शामिल हो जाते हैं।

सेवा में परिवर्तन

बपतिस्मे के समय आत्मिक समझ के कारण हम पाप की सेवा करने वाले जीवन का त्याग करके धार्मिकता की सेवा करने वाले नये जीवन में प्रवेश कर जाते हैं (रोमियों 6:16-18)। पाप हमें वश में कर लेता है और हम पाप के दास बन जाते हैं (यूहन्ना 8:34; रोमियों 6:16; 2 पतरस 2:19)। जब तक हम उस शिक्षा को मन से मानकर जो हमें दी गई थी, बदलते नहीं (रोमियों 6:17, 18), तब तक हम पाप के दासत्व में ही हैं। यह परिवर्तन तभी होता है जब हम बपतिस्मे में यीशु के साथ आत्मिक रूप से मरते हैं (रोमियों 6:3, 4)। उस समय, पुराने जीवन को क्रूस पर चढ़ा दिया जाता है, पाप की देह को मिटा दिया जाता है और हम पाप के दास नहीं रहते (रोमियों 6:4-6)। बपतिस्मे में पाप के लिए हमारी मृत्यु के द्वारा, हमें हम पर अधिकार करने वाली पाप की शक्ति से छुड़ाया जाता है (रोमियों 6:7, 18)।

सम्बन्धों में परिवर्तन

बपतिस्मा, लेने के समय, हमारे सम्बन्धों में भी बदलाव आ जाता है। बपतिस्मा लेने और यीशु के राज्य में हस्तांतरण करने से पहले, हम अंधेरे में और शैतान के राज्य में होते हैं (प्रेरितों 26:18; कुलुस्सियों 1:13)। हो सकता है कि हमें इसका अहसास न हो और हम इसे मानने के लिए तैयार न हों, परन्तु सच्चाई यही है। जब तक हम शैतान की इच्छाओं को पूरा करते हैं (यूहन्ना 8:44), तब तक हम शैतान की संतान ही रहते हैं (1 यूहन्ना 3:7, 8, 10)। हमारा विश्वास हमें शैतान की संतान होने से परमेश्वर की संतान में बदलने में सहायता करता है (गलतियों 3:26, 27)।

परमेश्वर के पुत्रों के रूप में हम अभी भी शैतान के पुत्रों के साथ इस संसार में रहते हैं (मत्ती 13:37-39)। जब फसल की कटाई के लिए स्वर्गदूतों को भेजा जाएगा तो वे राज्य के पुत्रों को शैतान के पुत्रों से अलग करेंगे। उस दुष्ट को पिता के राज्य में प्रवेश करने के बजाय आग में डाल दिया जाएगा (मत्ती 13:39-43)।

यदि हम पाप के अंधकार में हैं, तो हम परमेश्वर की संगति नहीं कर सकते, ज़्योंकि परमेश्वर रोशनी है और उसमें ज़रा भी अंधेरा नहीं है (1 यूहन्ना 1:5-7)। पाप हमें परमेश्वर से अलग करता है और उसकी संगति से दूर रखता है (यशायाह 59:1, 2)। जो लोग यीशु से बाहर हैं वे उससे अलग हैं अर्थात वे परमेश्वर और मसीह के बिना हैं (इफिसियों 2:11, 12)। जब बपतिस्मा लेकर हम यीशु में प्रवेश करते हैं (रोमियों 6:3; गलतियों 3:27) तो अंधकार से हमारी संगति खत्म हो जाती है और प्रकाश के साथ शुरू हो जाती है। यीशु में हमें उसके लहू के द्वारा परमेश्वर के निकट लाया जाता है (इफिसियों 2:13)।

सारांश

यह समझ आने पर कि बपतिस्मे के ज़्या लाभ हैं और परमेश्वर कौन से आत्मिक परिवर्तनों की अपेक्षा करता है, हमें बपतिस्मा ले लेना चाहिए। इन परिवर्तनों के बिना, हमें नया जीवन नहीं मिल सकता जो परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करवाता है (यूहन्ना 3:3-5)

बपतिस्मे में आत्मिक भागीदारी

बपतिस्मे का सज़्बन्ध उद्धार से है। यह विश्वास का एक कार्य है जिसका प्रतिफल उस विश्वास के कारण मिलता है जिसे यह करने के लिए प्रेरित करता है (प्रेरितों 2:38; कुलुस्सियों 2:12)। बपतिस्मे के मान्य होने के लिए शारीरिक कार्य के लिए समर्पित होने वाले की आत्मिक भागीदारी भी आवश्यक है। उसे यह समझ होनी आवश्यक है कि उसके पिछले पाप क्षमा होने जा रहे हैं। उसे इस बात का ज्ञान होना भी आवश्यक है कि इस गाड़े जाने और जी उठने से पुराना जीवन समाप्त हो जाता है अर्थात वह यीशु के साथ एक नये सज़्बन्ध में प्रवेश कर रहा है और उसे प्रभु मान रहा है।

हमारे पापों की क्षमा यीशु की मृत्यु, गाड़ने और दूसरों द्वारा पुनरुत्थान के किए कार्यों से होती है। उसी प्रकार, हमारा उद्धार बपतिस्मे में हमें किसी दूसरे व्यज़्ति द्वारा गाड़ने और उठाने के द्वारा होता है। यीशु के लहू द्वारा अपने पापों के धोए जाने में भरोसा रखकर शारीरिक रूप में बपतिस्मा लेते हुए, आत्मिक रूप से हमारे मनों की भागीदारी इसमें होती है (रोमियों 3:25)।